मैला आँचल : कथ्य और शिल्प

श्री श्याम नन्दन (सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार) - 845401

Email: shyamnandan@mgcub.ac.in

स्नातकोत्तर हिंदी, द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र: हिन्दी उपन्यास (HIND4008)

❖ अनुक्रम

❖ मैला आँचल

❖ कथ्य

❖ शिल्प

❖ निष्कर्ष

❖ सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

❖ ‘मैला आँचल’

- सन् 1954 ई. में प्रकाशित
- आंचलिक उपन्यास-परम्परा का प्रवर्तन
- आंचलिक उपन्यास परम्परा के प्रवर्तक - फणीश्वरनाथ ‘रेणु’
- उपन्यास-कथा का क्षेत्र मेरीगंज - पिछड़े गाँवों का प्रतीक

❖ जाति के आधार पर विभाजित टोले

- बारहों बरन के लोगों का एक बड़ा गाँव – मेरीगंज
- गाँव की संरचना - जातिगत आधार पर विभाजित टोले
- प्रमुख टोले - कायस्थ टोली, राजपूत टोली, यादव टोली
- *'पलिया टोली, तन्त्रिमा-छत्री टोली, युदवंशी-छत्री टोली, गहलोत-छत्री से टोली, कुर्म-छत्री टोली, धनुकधारी टोली, कुशवाहा-छत्री टोली और रैदास टोली'*
- जितनी जातियाँ - उतने टोले
- हर जाति का अपना एक पृथक टोला

❖जातिगत वैमनस्य

- जातियों में पारस्परिक विद्वेष, ईर्ष्या, वैमनस्यता
- अपनी जाति को श्रेष्ठतर और अन्य जाति को हीनतर दिखाने की प्रवृत्ति
- उदाहरण – कैथ टोली, सिपहिया टोली, गुअर टोली नामकरण

❖ अशिक्षा, अंध-विशवास और गरीबी

- ‘बारहो बरन’ के लोगों वाले मेरीगंज में साक्षरों की संख्या पच्चीस
- अपढ़ किसान का दस्तावेजों पर अपना अंगूठा टीपना
- अंध विश्वास का प्रमुख कारण अशिक्षा
- *‘अशिक्षा और अंधविश्वास से ग्रस्त समाज की निर्धनता स्वयं सिद्ध तथ्य है।’ – गोपाल राय*

❖भूमि समस्या और जमींदारी-शोषण

- किसानों की निर्धनता के दो प्रमुख कारण - भूमि की समस्या और जमींदारी-शोषण
- दोनों समस्याएं परस्पर अन्योन्याश्रित
- जमीन की नई बन्दोवस्ती में किसानों का पारस्परिक वैमनस्य
- किसानों की फूट से जमींदारों को लाभ

❖ राजनीति में जाति का प्रवेश

- तहसीलदार विश्वनाथ के नेतृत्व में कायस्थ टोली के लोग -कांग्रेस से
- हरगौरी के नेतृत्व में राजपूत टोली के लोग - राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से
- कालीचरन के नेतृत्व में यादव जाति के लोग - सोशलिष्ट पार्टी से
- सोशलिस्ट पार्टी का जाति आधारित संगठन
- यादवों को संगठन से जोड़ने हेतु कामरेड गंगा प्रसाद सिंह यादव आगमन

❖ समकालीन भारतीय राजनीति का लघु रूप

- आजादी के बाद राजनीति का विकृतीकरण
- जनविरोधी और सामन्ती-पूँजीवादी कांग्रेस का चरित्र
- स्वार्थ की राजनीति करते सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट दल

❖ वर्ग की राजनीति

- एक वर्ग - गरीब, किसान और निम्न जाति के शोषितों का
- दूसरा वर्ग - ऊँची जाति वाले जमींदारों का
- तात्कालीन राजनीति पार्टियों, संगठनों की कार्य-पद्धति का चित्रण
- राजनीतिक संगठनों के नैतिक और सैद्धान्तिक खोखलेपन का अंकन

❖ अन्य विषय

- धार्मिक पाखण्ड और भ्रष्टाचार
- अनैतिक सम्बन्ध
- लोक संस्कृति
- आदर्शवादी अंत

❖ शिल्प

कथानक संयोजन

- बिखरे हुए कथा-सूत्रों एवं घटना- बहुलता वाला कथानक
- चलचित्र की तरह तेजी से बदलते दृश्य
- कथा-प्रस्तुति में दृश्यात्मक और परिदृश्यात्मक शैलियों का प्रयोग
- परिदृश्यात्मक प्रविधि के द्वारा कथा की नाटकीय प्रस्तुति
- असंबद्ध और बिखरे कथासूत्र - उपन्यास का वैशिष्ट्य

❖ भाषा एवं शैली

- आंचलिक भाषा का प्रतिमान
- मिथिला की आंचलिक-बोली का प्रभाव
- पात्रों के शैक्षिक, सामाजिक स्तर पर विविधतापूर्ण भाषा
- ध्वनि बिम्बों की योजना द्वारा ‘श्रव्य-दृश्य’सजीव वर्णन
- सफल ध्वनि-दृश्यात्मक बिम्ब-योजना
- औपन्यासिक भाषा का एक नया आयाम

❖पात्र एवं चरित्र-चित्रण

- नायक के रूप में ‘मेरीगंज’
- पिछड़े अंचल को ही ‘नायक’ बनाने की परम्परा की शुरूआत
- सभी पात्रों द्वारा मिलकर अंचल की चरित्र-निर्मिति
- बड़ी संख्या होने पर भी हर पात्र अलग अस्तित्व
- अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए भी व्यक्तिगत विशेषताएं लिए हुए पात्र

❖संवाद-योजना

- परिवेश के अनुकूल संवाद-योजना
- कथोपकथन और संवाद जन-सामान्य में प्रचलित आम बोल-चाल के शब्दों से युक्त एवं पात्रानुकूल
- पात्रों के संवाद प्रसंगानुकूल, सहज, स्वाभाविक और प्रभावशाली

❖ देशकाल एवं वातावरण

- आंचलिक वातावरण की निर्मिति में सफल
- स्वातंत्रयोत्तर भारतीय गांवों का राजनीतिक परिवेश
- पिछड़े अंचल के परिवेश का यथार्थ

❖उद्देश्य

- आजादी के समय ग्रामीण अंचलों के सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक यथार्थ का चित्रण
- किसानों की आर्थिक, सामाजिक दशा के साथ उनमें आती राजनीतिक चेतना चित्रण
- भारतीय गाँवों के पिछड़ेपन की बीमारी के मूल कारणों की तलाश

❖ निष्कर्ष

- पिछड़ेपन की व्याधि के दो कीटाणुओं ‘गरीबी और जहालत’ की खोज में सफल
- आंचलिक उपन्यासों की नई परम्परा का प्रवर्तन
- हिन्दी उपन्यास की विकास-यात्रा में मील का पत्थर

❖सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

- मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014
- हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016

धन्यवाद